

अमृत मींहु वसाई

(४०)

मूखे तवहां जे प्यार जो आ सहारो सदाई

ओ राजा साई।

तूई दीन दुखियुनि जो साई आधार आहीं

ओ राजा साई॥१॥

लहीं लाट तां लालण आएं बाबा रोचल जे घर ज़ाएं

तुंहिजे रूप रसीले जहिड़ो टिन्ही लोकनि नाहीं

ओ राजा साई॥२॥

परा प्रेम जो तूं दाता दयालू करुणा सागर अति कृपालू

सतिसंग जो सम्राट स्वामी रस जी नदी वहाई

ओ राजा साई॥३॥

वात्सल्य रस जी तूं मूरति मिठिड़ा

परम रिझिवार साहिब सुठिड़ा

ऐब न कंहिजा दिसीं अलख तूं सभ जा गुण साराहीं

ओ राजा साई॥४॥

सभा सूरजु साई प्यारो रस रिझिवार बापू बाझारो

हिकिड़ो बोलु बि रस आनंद बिनु कदहीं न कथन कराई

ओ राजा साई॥५॥

खेल कोट खुशियुनि में घारीं

जिति किथि लाल लीला निहारीं

अद्भुत दृष्टी अबल अवहांजी अमृत मींह वसाई

ओ राजा साई॥६॥

पीरनि पीरु तूं मीरनि मीरु आं

शरणि पालकु सज़णु सुधीर आं

श्री सियाराम जे सोज़ में प्रीतम प्राणनि खे परिचाई

ओ राजा साई॥७॥

जै जै मैगसि चंद्र रसीला प्रणत जननि जा वाहर वसीला

दिव्य उन्माद जो आनंद माणीं लोकनि में न लखाई

ओ राजा साई॥८॥